Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur

समन्वय (Co-Ordination)

संगठन में व्यवस्थित सन्तुलन बनाए रखने के लिए समन्वय आवश्यक है। समन्वयों का मानवीय व्यवस्थीकरण संगठनात्मक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्यात्मक एकता प्रदान करता है। समन्वय का सरलतम अभिप्राय है – समरसता उत्पन्न करना अर्थात एक संगीतसाज के विभिन्न लय वाले सुरों को समरस बनाकर मधुर संगीत उत्पन्न करना।

न्यूमैन समन्वय को संगठन की पृथक प्रक्रिया नहीं मानते। उनके अनुसार तो यह प्रशासन के सभी चरणों में व्याप्त रहती है। उसने समन्वय को प्रयत्नों की ऐसी समकालिकता माना है जिससे कार्य में निष्पादन का उचित दायित्व, समय तथा निर्देशन निर्धारित होता है। निर्धारित लक्ष्य के लिए सामंजस्यपूर्ण एवं एकीकृत क्रियाएँ सम्भव होती हैं।

समन्वय का अर्थ सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही रूपों में किया जाता है। सकारात्मक रूप में इसके अनुसार ऐसे उपाय करना ताकि उद्देश्य की समरूपता, प्रयासों की एकता, कर्मियों में सहयोग और विभिन्न खण्डों के मध्य व्यवस्था प्राप्त की जा सके। नकारात्मक रूप में समन्वय संगठनात्मक गतिरोधों और प्रशासनिक संक्रियाओं के अतिच्छादन को रोकता है।

वास्तव में व्यक्तिगत प्रयासों को सामूहिक प्रयासों में सफलतापूर्वक रूपांतरित करना ही समन्वय है।